श्री मद-भगवद-गीता में विज्ञान



विषय सूचि

Kamlesh C. Patel
EternalReligion.org

१. भगवद-गीता क्या है?

- ॐ ईश्वर का गीत
- ॐ साक्षात भगवान की वाणी
- ॐ सीधे भगवान (भगवान कृष्ण) द्वारा बोली गई
- ॐ मनुष्य (अर्जुन) और भगवान के बीच का संवाद
- ॐ १८ अध्याय, ७०० छंद
- ॐ ५००० साल पहले धरती पर अंतिम बार बोला गया था
- ॐ ये कई अन्य ग्रंथों में से एक ग्रन्थ नहीं है
- ॐ इस और अन्य ब्रह्मांडों में हजारों बार बोला गया है

"यह ज्ञान सब विद्याओं का राजा है, जो समस्त रहस्यों में सर्वाधिक गोपनीय है. यह परम शुद्ध है और चूँकि यह आत्मा की प्रत्यक्ष अनुभूति कराने वाला है, अतः यह धर्म का सिद्धान्त है. यह अविनाशी है और अत्यन्त सुखपूर्वक सम्पन्न किया जाता है." (भगवान कृष्ण, भगवद-गीता ९ .२)

२. भगवद-गीता के आवश्यक उपदेश क्या हैं?

- ॐ ईश्वर एक है और उन्हें विभिन्न नामों से जाना जाता है.
- ॐ जीवित तत्त्व शाश्वत आत्मा है न कि अस्थायी शरीर.
- ॐ सभी आत्माएं १००% समान हैं. सभी शाश्वत हैं, ज्ञान से भरे हैं, और आनंद से भरे हैं.
- ॐ सभी आत्माएं भगवान को समान रूप से बहुत प्रिय हैं.
- ॐ जीवन एक बुद्धिमान रचना है, यहाँ कुछ भी संयोग से नहीं होता (कर्म).
- ॐ किसी भी जीवित प्राणी (जानवर, इंसान, पेड़) के प्रति कोई हिंसा नहीं करना चाहिए.
- ॐ कोई नशा (शराब, ड्रग्स, तंबाकू) और जुआ न करे.
- ॐ शादी से बाहर कोई रिश्ता न रखे.
- ॐ कोई घृणा, झूठ, धोका, कोस और चोरी न करे.
- ॐ किसी भी आत्मा के लिए कोई शाश्वत नरकवास नहीं.
- ॐ बिना अपेक्षा के कार्य करें.
- ॐ वासना, लालच और क्रोध को त्याग दे.
- ॐ जो आपके पास है उससे संतुष्ट रहे, दूसरों से न मांगें और एक सादा जीवन जिएं.
- ॐ भगवान और दूसरों के आभारी रहें, भले ही आप के पास कम हों.
- ॐ दूसरों ने आपके लिए जो किया उसकी सराहना करें, भले ही उन्होंने आपको चावल का सिर्फ एक अनाज दिया हो.

३. भगवान का विज्ञान

भगवान सर्वव्यापी है, जिसका अर्थ है कि वह हर जगह मौजूद है.

"मैं हर जगह हूँ..." (भगवान कृष्ण, भगवद-गीता ९ .५)

भगवान सर्वशक्तिमान है, जिसका अर्थ है कि वह सबसे महान है.

"मैं तो अपने एक अंश मात्र से सम्पूर्ण ब्रहमाण्ड में व्याप्त होकर इसको धारण करता हूँ ..." (भगवान कृष्ण, भगवद-गीता १०.४२)

भगवान सर्वज्ञ है, जिसका अर्थ है कि वह भूत, वर्तमान और सभी के भविष्य को जानते है.

"हे अर्जुन. श्रीभगवान् होने के नाते मैं जो कुछ भूतकाल में घटित हो चुका है, जो वर्तमान में घटित हो रहा है और जो आगे होने वाला है, वह सब कुछ जानता हूँ. मैं समस्त जीवों को भी जानता हूँ, किन्तु मुझे कोई नहीं जानता." (भगवान कृष्ण, भगवद गीता ७. २६)

भगवान सबके लिए समान है

"मैं न तो किसी से द्वेष करता हूँ, न ही किसी के साथ पक्षपात करता हूँ. मैं सबों के लिए समभाव हूँ. किन्तु जो भी भक्तिपूर्वक मेरी सेवा करता है, वह मेरा मित्र है, मुझमें स्थित रहता है और मैं भी उसका मित्र हूँ." (भगवान कृष्ण, भगवद-गीता ९ .२९)

भगवान सबके शुभचिंतक है

"मुझे समस्त यज्ञों तथा तपस्याओं का परं भोक्ता, समस्त लोकों तथा देवताओं का परमेश्वर एवं समस्त जीवों का उपकारी एवं हितैषी जानकर मेरे भावनामृत से पूर्ण पुरुष भौतिक दुखों से शान्ति लाभ-करता है." (भगवान कृष्ण, भगवद-गीता ५.२९)

भगवान सबसे समृद्ध है

"हे परन्तप! मेरी दैवी विभूतियों का अन्त नहीं है. मैंने तुमसे जो कुछ कहा, वह तो मेरी अनन्त विभूतियों का संकेत मात्र है." (भगवान कृष्ण, भगवद-गीता १०.४०)

भगवान सर्वोच्च निर्माता है

"सम्पूर्ण विराट जगत मेरे अधीन है. यह मेरी इच्छा से बारम्बार स्वतः प्रकट होता रहता है और मेरी ही इच्छा से अन्त में विनष्ट होता है." (भगवान कृष्ण, भगवद-गीता ९.८)

"मैं समस्त आध्यात्मिक तथा भौतिक जगतों का कारण हूँ, प्रत्येक वस्तु मुझ ही से उद्भूत है. जो बुद्धिमान यह भलीभाँति जानते हैं, वे मेरी प्रेमाभक्ति में लगते हैं तथा हृदय से पूरी तरह मेरी पूजा में तत्पर होते हैं." (भगवान कृष्ण, भगवद-गीता १०.८)

"यही नहीं, हे अर्जुन! मैं समस्त सृष्टि का जनक बीज हूँ. ऐसा **चर** तथा अचर कोई भी प्राणी नहीं है, जो मेरे बिना रह सके." (भगवान कृष्ण, भगवद-गीता १०.३९)

भगवान सृजन की उत्पत्ति है

"मैं सृष्टि का कारणस्वरूप हूँ..." (भगवान कृष्ण, भगवद-गीता ९ .५)

भगवान सर्वोच्च नियंत्रक है

"मैं ही ताप प्रदान करता हूँ और वर्षा को रोकता तथा लाता हूँ..." (भगवान कृष्ण, भगवद-गीता ९ .१९)

भगवान सर्वोच्च अनुरक्षक है

"मैं प्रत्येक लोक में प्रवेश करता हूँ और मेरी शक्ति से सारे लोक अपनी कक्षा में स्थित रहते हैं." (भगवान कृष्ण, भगवद-गीता १५.१३)

भगवान सभी को समान रूप से मानते हैं

"जब मनुष्य निष्कपट हितैषियों, प्रिय मित्रों, तटस्थों, मध्यस्थों, ईर्ष्यालुओं, शत्रुओं तथा मित्रों, पुण्यात्माओं एवं पापियों को समान भाव से देखता है, तो वह और भी उन्नत माना जाता है." (भगवान कृष्ण, भगवद-गीता ६.९)

"जो मित्रों तथा शत्रुओं के लिए समान है, जो मान तथा अपमान, शीत तथा गर्मी, सुख तथा दुख, यश तथा अपयश में समभाव रखता है, जो दूषित संगति से सदैव मुक्त रहता है, जो सदैव मौन और किसी भी वास्तु से संतुष्ट रहता है, जो किसी प्रकार के घर-बार की परवाह नहीं करता, जो ज्ञान में दृढ़ है और जो भक्ति में संलग्न है - ऐसा पुरुष मुझे अत्यन्त प्रिय है." (भगवान कृष्ण, भगवद-गीता १२-१८-१९)

भगवान हमारे सभी कर्मो का साक्षी है

"मैं ही लक्ष्य, पालनकर्ता, स्वामी, साक्षी, धाम, शरणस्थली तथा अत्यन्तप्रिय मित्र हूँ. मैं सृष्टि तथा प्रलय, सबका आधार, आश्रय तथा अविनाशी बीज भी हूँ." (भगवान कृष्ण, भगवद-गीता ९.१८)

भगवान प्रकट होते हैं

भगवान कृष्ण अपने मूल रूप में हर ८.६४ अरब वर्षों में एक बार प्रकट होते हैं और अन्य पारलौकिक रूपों में लाखों बार.

"यद्यपि मैं अजन्मा तथा अविनाशी हूँ और यद्यपि मैं समस्त जीवों का स्वामी हूँ, तो भी प्रत्येक युग में मैं अपने आदि दिव्य रूप में प्रकट होता हूँ." (भगवान कृष्ण, भगवद-गीता ४.६)

४. जीवित तत्त्वो का विज्ञान

जीवित तत्त्व शाश्वत आत्मा है न कि अस्थायी शरीर

हम भौतिक शरीर में बंद एक आध्यात्मिक जीव हैं. हमारी (आत्मा) अनन्त हैं और जिस शरीर में आत्मा निवास करती है वह अस्थायी है.

"जो सारे शरीर में व्याप्त है उसे ही अविनाशी समझो. उस अव्यय आत्मा को नष्ट करने में कोई भी समर्थ नहीं है" (भगवान कृष्ण, भगवद-गीता २.१७)

ऊर्जा के संरक्षण का नियम, भगवद-गीता में लिखे हुए आत्मा ज्ञान के विज्ञान का समर्थन करता है

ऊर्जा न तो बनाई जा सकती है और न ही नष्ट की जा सकती है लेकिन इसे एक वस्तु से दूसरी वस्तु में स्थानांतरित किया जा सकता है। हम (आत्मा) ऊर्जा हैं और शरीर रूप हैं। जब हमारा वर्तमान रूप (शरीर) नष्ट हो जाता है, तो हम दूसरे रूप (दूसरे शरीर) में चले जाते हैं।



ऊर्जा (आत्मा) को नष्ट नहीं किया जा सकता है, लेकिन इसे एक शरीर से दूसरे में स्थानांतरित किया जा सकता है

"ऐसा कभी नहीं हुआ कि मैं न रहा होऊँ या तुम न रहे हो अथवा ये समस्त राजा न रहे हों; और न ऐसा है कि भविष्य में हम लोग नहीं रहेंगे. जिस प्रकार शरीरधारी आत्मा इस (वर्तमान) शरीर में बाल्यावस्था से तरुणावस्था में और फिर वृद्धावस्था में निरन्तर अग्रसर होता रहता है, उसी प्रकार मृत्यु होने पर आत्मा दूसरे शरीर में चला जाता है. धीर व्यक्ति ऐसे परिवर्तन से मोह को प्राप्त नहीं होता (भगवान कृष्ण, भगवद-गीता २.१२-२.१३)

"यह आत्मा न तो कभी किसी शस्त्र द्वारा खण्ड-खण्ड किया जा सकता है, न अग्नि द्वारा जलाया जा सकता है, न जल द्वारा भिगोया या वायु द्वारा सुखाया जा सकता है." (भगवान कृष्ण, भगवद-गीता २.२३)

हम सब चिरकालिक है

जब एक व्यक्ति की मृत्यु हो जाती है, तो हम कहते हैं कि 'वह गुजर गया', लेकिन शरीर हमारे सामने होता है. इसका मतलब है कि हम दो तत्वोंके बारे में बोलते है 'शरीर' और 'वह'. 'वह' आत्मा है, यह भगवद-गीता की पहली शिक्षा है. वास्तविक 'वह' आत्मा है न कि शरीर. शरीर अस्थायी है लेकिन 'वह' अनन्त है. वह (आत्मा) कहाँ गुज़र गयी? एक और शरीर में बस गयी।



मृत्यु अंत नहीं है. यह एक नए जीवन की शुरुआत है.

"जिसने जन्म लिया है उसकी मृत्यु निश्चित है और मृत्यु के पश्चात् पुनर्जन्म भी निश्चित है अतः अपने अपरिहार्य कर्तव्यपालन में तुम्हें शोक नहीं करना चाहिए" (भगवान कृष्ण, भगवद-गीता २.२७)

"जिस प्रकार मनुष्य पुराने वस्त्रों को त्याग कर नए वस्त्र धारण करता है, उसी प्रकार आत्मा पुराने तथा व्यर्थ के शरीरों को त्याग कर नवीन भौतिक शरीर धारण करता है." (भगवान कृष्ण, भगवद-गीता २.२२)

आत्मा के गुण

कोई भी देख सकता है कि जीवित प्राणियों (मनुष्यों, पौधों और जानवरों) के भौतिक शरीर शारीरिक रूप से अलग, अस्थायी, विभिन्न स्थितियों, परिस्थितियों और स्थानों में स्थित हैं. प्रत्येक जीवित प्राणियों के शरीर के भीतर, आत्मा है, जो समान और शाश्वत हैं.

- **हम आत्मा हैं न कि शरीर.**
- **सभी जीवित प्राणियों (मनुष्यों, पौधों और जानवरों) में एक आत्मा होती है.**
- **सभी आत्माएं समान हैं, कोई आत्मा न तो नीच है और न ही दूसरे से श्रेष्ठ है.**
- **आत्मा न ब्राह्मण है, न क्षत्रिय, न वैश्य, न शूद्र.**
- **आत्मा उच्च जाति नहीं है, न ही निम्न जाति.**

- सभी आत्माएं शाश्वत हैं, ज्ञान से भरी हैं, और पूरी तरह से आनंदित हैं.
- प्रत्येक आत्मा का ईश्वर के साथ एक शाश्वत संबंध है.
- प्रत्येक आत्मा ईश्वर का पारिवारिक सदस्य है.
- प्रत्येक आत्मा हृदय में परमात्मा (भगवान) के साथ है. वह साक्षी, परमार्थी और शुभचिंतक है.
- हर आत्मा को अंततः मुक्ति मिलती है, कोई शाश्वत नरकवास नहीं है.
- किसी भी हथियार से आत्मा को नष्ट नहीं किया जा सकता है, जलाया नहीं जा सकता है, न ही उड़ाया जा सकता है और न ही गिला किया जा सकता है.
- आत्मा न तो पुरुष है और न ही महिला.
- आत्मा न तो काली है और न ही सफेद है.
- आत्मा भारतीय नहीं है, न ही अमेरिकी, न ही अफ्रीकी.
- आत्मा न हिंदू है, न ईसाई, न मुसलमान.
- आत्मा न तो रोगग्रस्त है और न ही स्वस्थ है.
- एक आत्मा दूसरे की तुलना में न तो अधिक अमीर है और न ही गरीब है.
- आत्मा बूढ़ा नहीं है, न ही जवान है, और न ही आत्मा की उम्र होती है.
- आत्मा का कोई वजन नहीं है और उसे आँखों से नहीं देखा जा सकता है.
- आत्मा सभी जीवित प्राणियों के दिल में स्थित है.
- हर आत्मा का आकार बालों की नोक का १ / १०,००० वां हिस्सा है.

जीवित जीवों की प्रजातियों की संख्या



जलज नव लक्षाणी, स्थावर लक्ष विंशति, कृमयो रूद्र संख्यकः ।
पक्षिणाम दश लक्षणं, त्रिम्शल लक्षाणी पशवः, चतुर लक्षाणी मानवः ।।
(पद्म पुराण)

जलजा (जल आधारित जीवन रूप) - ९ लाख
स्थावर (पौधे और पेड़) - २० लाख
क्रिमायो(रेंगनेवाले) -११ लाख
पक्षिनाम(पक्षी)- १० लाख
पशवः (पशु)- ३० लाख
मानवः (मनुष्य जैसे) - ४ लाख

जीवित प्राणियों की कुल ८४ लाख प्रजातियां

आत्मा अपनी इच्छाओं और योग्यता के आधार पर एक शरीर धारण कर लेती है

जीवित तत्त्व (आत्मा) को एक विशेष शरीर, ब्रह्मांड, ग्रह, देश, शहर, सड़क, घर, कमरे और एक विशेष माँ के गर्भ में रखा जाता है - ठीक उसके पिछले कर्मों के अनुसार. जीवन एक बुद्धिमान रचना है; यहाँ संयोग से कुछ भी नहीं होता है.

"इस संसार में जीव अपनी देहात्मबुद्धि को एक शरीर से दूसरे में उसी तरह ले जाता है, जिस प्रकार वायु सुगन्धि को ले जाता है । इस प्रकार वह एक शरीर धारण करता है और फिर इसे त्याग कर दूसरा शरीर धारण करता है" (भगवान कृष्ण, भगवद-गीता १५.८)

"इस प्रकार जीव प्रकृति के तीनों गुणों का भोग करता हुआ प्रकृति में ही जीवन बिताता है . यह उस प्रकृति के साथ उसकी संगति के कारण है . इस तरह उसे उत्तम तथा अधम योनियाँ मिलती रहती हैं." (भगवान कृष्ण, भगवद-गीता १३.२२)

५ आध्यात्मिक जीवन का विज्ञान

भक्ति सेवा (भक्ति)

एक धर्मपरायण व्यक्ति खुले दिमाग का होगा और विभिन्न आध्यात्मिक विषयों पर पूछताछ करेगा.

भक्ति का अर्थ है भगवान के लिए समय, ऊर्जा और संसाधनों का उपयोग करना. यह ध्यान में रखकर की हम एक आध्यात्मिक जीव है हमें वही काम करने चाहिए जो हमारी अविनाशी और सनातन आत्मा के लिए सही हो. यह भगवान की भक्ति या भक्ति सेवा है.

भक्ति के लिए ४ तत्व हैं.

१. भगवान कृष्ण के बारे में सचेत होना

हमेशा भगवान कृष्ण के बारे मैं सोचना.

"अतएव, हे अर्जुन! तुम्हें सदैव कृष्ण रूप में मेरा चिन्तन करना चाहिए.." (भगवान कृष्ण, भगवद-गीता ८ .७)

"अपने मन को मेरे नित्य चिन्तन में लगाओ..." (भगवान कृष्ण, भगवद-गीता ९ .३४)

"सदैव मेरा चिन्तन करो..." (भगवान कृष्ण, भगवद-गीता १८.६५)

हम कृष्ण के बारे में कैसे सोच सकते हैं?

कृष्ण के बारे में सोचने के एक नहीं बल्कि कई तरीके हैं

उ १. सारा दिन अपने मन को कृष्ण में एकचित्त करो. यह एकांत स्थान में एकांत जीवन जीने और कृष्ण पर पूरे दिन ध्यान करने से प्राप्त किया जा सकता है. यह अधिकांश लोगों के लिए सबसे कठिन और संभव नहीं है.

"मुझ भगवान् में अपने चित्त को स्थिर करो और अपनी सारी बुद्धि मुझमें लगाओ. इस प्रकार तुम निस्सन्देह मुझमें सदैव वास करोगे." (भगवान कृष्ण, भगवद-गीता १२. ८)

उ ०२. यदि उपरोक्त संभव नहीं है, तो भक्ति-योग के सिद्धांतों के माध्यम से, पूरे दिन सेवा करते हुए एक मंदिर में एक अविवाहित व्यक्ति के रूप में रह सकते हैं. भक्ति योग के यह सिद्धांत है की सुबह जल्दी उठे, वैदिक मंत्रों का जाप करें, देवता की सेवा करें, भोजन सामग्री पकाएं और देवता को अर्पित करें, प्रसादम लें, प्रसादम वितरित करें, वैदिक शास्त्रों को पढ़ें. सत्यवादी रहना, दयालु रहना, कोई नशा, कोई मांस का सेवन नहीं करना इन सिद्धांतों का पालन करें. कोई अवैध संबंध नहीं, कोई जुआ नहीं, कोई भौतिकवादी कार्य नहीं, और कोई अर्थ संतुष्टि नहीं.

"हे अर्जुन, हे धनञ्जय! यदि तुम अपने चित्त को अविचल भाव से मुझ पर स्थिर नहीं कर सकते, तो तुम भक्तियोग के विधि-विधानों का पालन करो. इस प्रकार तुम मुझे प्राप्त करने की चाह उत्पन्न करो." (भगवान कृष्ण, भगवद-गीता १२.९)

उ ०३. यदि ऊपर वर्णित भक्ति-योग के सिद्धांत बहुत कठिन हैं, तो कृष्ण के लिए काम कर सकते हैं. इस प्रकार, कोई नौकरी में काम करके या व्यवसाय में संलग्न होकर और कृष्ण की सेवा में दान दे सकते है, जो मंदिरों और / या उपदेश सेवा में लगे लोगोंके काम आ सकता है.

"यदि तुम भक्तियोग के विधि-विधानों का भी अभ्यास नहीं कर सकते, तो मेरे लिए कर्म करने का प्रयत्न करो, क्योंकि मेरे लिए कर्म करने से तुम पूर्ण अवस्था (सिद्धि) को प्राप्त होगे." (भगवान कृष्ण, भगवद-गीता १२. १०)

उ ०४. विभिन्न कारणों से कोई व्यक्ति कृष्ण की सेवा में अपना धन नहीं दे सकता है. इस मामले में अर्जित धन अस्पतालों को दिया जा सकता है, गरीबों को खिलाया जा सकता और अन्य कोई दान किया जा सकता है. इस तरह से निस्वार्थ से काम करने का अनुभव ले सकते है. इससे मन शुद्ध होगा और शुद्ध मन के साथ, व्यक्ति कृष्ण चेतना को समझने में सक्षम हो जाता है.

"किन्तु यदि तुम मेरे इस भावनामृत में कर्म करने में असमर्थ हो तो तुम अपने कर्म के समस्त फलों को त्याग कर कर्म करने का तथा आत्म-स्थित होने का प्रयत्न करो." (भगवान कृष्ण, भगवद-गीता १२.११)

उ ०५. यदि कोई धन से लगाव के कारण अर्जित धन को छोड़ने में सक्षम नहीं है तो ऐसे व्यक्ति को आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त करना चाहिए, क्योंकि ज्ञान से, व्यक्ति धीरे-धीरे अपनी वास्तविक स्थिति को समझने में सक्षम होगा (वह अस्थायी शरीर नहीं है, लेकिन अनन्त आत्मा, परमात्मा का हिस्सा है)। आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्ति से अंततः सर्वोच्च भगवन पर ध्यान जाएगा, इससे भौतिक वस्तुओं और अर्थ संतुष्टि से त्याग और वैराग्य पैदा होगा.

"यदि तुम यह अभ्यास नहीं कर सकते, तो ज्ञान के अनुशीलन में लग जाओ | लेकिन ज्ञान से श्रेष्ठ ध्यान है और ध्यान से भी श्रेष्ठ कर्म फलों का परित्याग क्योंकि ऐसे त्याग से मनुष्य को मनःशान्ति प्राप्त हो सकती है." (भगवान कृष्ण, भगवद-गीता १२.१२)

उ ०६. मंत्रों का जप करके भी कृष्ण के बारे में सोच सकते हैं.

"ये महात्मा मेरी महिमा का नित्य कीर्तन करते हुए दृढसंकल्प के साथप्रयास करते हुए, मुझे नमस्कार करते हुए, भक्तिभाव से निरन्तर मेरी पूजा करते हैं." (भगवान कृष्ण, भगवद-गीता ९.१४)

उ ०७. भगवद-गीता और अन्य वैदिक शास्त्रों को पढ़ने और / या सुनने के द्वारा भी कृष्ण को सोच सकते हैं. इसे बुद्धिमत्ता के साथ भक्ति करना माना जाता है, क्योंकि आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त करके कृष्ण के बारे में सोचेगा तब वह अधिक समझ विकसित करेगा और भगवान् कृष्ण से लगाव बढ़ाएगा.

"और मैं घोषित करता हूँ कि जो हमारे इस पवित्र संवाद का अध्ययन करता है, वह अपनी बुद्धि से मेरी पूजा करता है." (भगवान कृष्ण, भगवद-गीता १८. ७०)

"जो योगी मुझे तथा परमात्मा को अभिन्न जानते हुए परमात्मा की भक्तिपूर्वक सेवा करता है, वह हर प्रकार से मुझमें सदैव स्थित रहता है".(भगवान कृष्ण, भगवद-गीता ६.३१)

आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त करने से एक बोध यह है कि हमें पता चलेगा कि परमात्मा कृष्ण है, और इस समझ को कृष्ण की पूजा माना जाता है,यही भक्ति है.

उ ०८.   कृष्ण की पूजा भक्ती है, और भगवद-गीता और अन्य वैदिक शास्त्रों में इसका उल्लेख कई छंदों में किया गया है. उपासना का अर्थ है कृष्ण के देवता रूप की सेवा.

"जो अपने सारे कार्यों को मुझमें अर्पित करकेतथा अविचलित भाव से मेरी भक्ति करते हुए मेरी पूजा करते हैं और अपनेचित्तों को मुझ पर स्थिर करके निरन्तर मेरा ध्यान करते हैं, उनके लिए हेपार्थ! मैं जन्म-मृत्यु के सागर से शीघ्र उद्धार करने वाला हूँ." (भगवान कृष्ण, भगवद-गीता १२.६-७)

कुछ लोग भगवान को नमन करके उनकी पूजा करते हैं, और उनका मानना है कि उनके पास कोई रूप नहीं है / या वह यहां मौजूद नहीं हैं. यह निश्चित रूप से अच्छा है, लेकिन यह भगवन की सेवा नहीं है। क्योंकि भगवान को उनके सामने झुकने वालो से कोई व्यक्तिगत लाभ नहीं होता. यह उस तरह होगा जैसे कोई सरकारी नौकर राष्ट्रपति के सामने झुकता हो. इस से राष्ट्रपति को कोई लाभ नहीं होगा. सरकारी कर्मियों को देश को बनाए रखने के लिए कोई वास्तविक काम करना चाहिए और यह राष्ट्रपति और देश के लिए लाभकारी है. ऐसे नागरिक जो सिर्फ सर झुकाते है राजा के कोई काम के नहीं होते. राजा को अगर लाभ देना है तो नागरिकोंको वास्तव में काम करने होंगे.

भगवन मूर्ति स्वरुप हमारे समक्ष मौजूद है और उनकी इसी रूप में उनकी सेवा सच्ची सेवा है, जिसका लाभ स्वयं भगवन लेते है. भगवान कृष्ण देवता रूप में मौजूद हैं और जब उन्हें जल, पत्ता, या फूल चढ़ाया जाता है, तो वे इसे स्वीकार करते हैं.

"यदि कोई प्रेम तथा भक्ति के साथ मुझे पत्र, पुष्प, फल या जल प्रदान करता है, तो मैं उसे स्वीकार करता हूँ." (भगवान कृष्ण, भगवद-गीता ९.२६)

उ ०९.   भगवद-गीता अर्जुन से बोली गई थी, और उन्होंने मंत्रों का जाप नहीं किया था, लेकिन फिर भी वह भगवान कृष्ण का एक शुद्ध भक्त था, क्योंकि वह कृष्ण के लिए अपनी शक्ति का उपयोग कर रहा था. यह भक्ती है. महाराज परीक्षित एक शुद्ध भक्त का एक और उदाहरण है, भले ही उन्हें बता दिया गया था कि उनके जीवन के ७ दिन शेष हैं. वह केवल आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त करने में रुचि रखते थे, यह भक्ती है।

"आज मेरे द्वारा वही यह प्राचीन योग यानी परमेश्र्वर के साथ अपने सम्बन्ध का विज्ञान, तुमसे कहा जा रहा है, क्योंकि तुम मेरे भक्त तथा मित्र हो, अतः तुम इस विज्ञान के दिव्य रहस्य को समझ सकते हो." (भगवान कृष्ण, भगवद-गीता ४.३)

उ १०. उपरोक्त सभी भक्ती मार्ग केवल स्वयं के लाभ के लिए हैं. सबके हित के लिए कुछ करना ही सर्वोच्च भक्ती है.

"जो व्यक्ति भक्तों को यह परम रहस्य बताता है, वह शुद्ध भक्ति को प्राप्त करेगा और अन्त में वह मेरे पास वापस आएगा. इस संसार में उसकी अपेक्षा कोई अन्य सेवक न तो मुझे अधिक प्रिय है और न कभी होगा.." (भगवान कृष्ण, भगवद-गीता १८.६८-६९)

उपदेश और प्रचार भगवान कृष्ण की सर्वोच्च सेवा है, क्योंकि प्रचार करने से, बहुत से लोग कृष्ण के बारे में जानेंगे और यह भी जानेंगे की उनकी सेवा कैसे करें (उपरोक्त बताये गए मार्ग). इस प्रकार, कई आत्माएं पृथिवी से छुटकारा पाकर भगवान कृष्ण के निवास स्थान यानि वैकुंठ पहुँच जाएँगी जो आध्यात्मिक देवभूमि है.

"जो लोग संशय से उत्पन्न होने वाले द्वैत से परे हैं, जिनके मन आत्म-साक्षात्कार में रत हैं, जो समस्त जीवों के कल्याणकार्य करने में सदैव व्यस्त रहते हैं और जो समस्त पापों से रहित हैं, वे ब्रह्मनिर्वाण (मुक्ति) को प्राप्त होते हैं (भगवान कृष्ण, भगवद-गीता ५.२५)

जो उपदेश देते हैं वे दूसरों के हित के लिए कुछ कर रहे हैं. वे लगातार कृष्ण के बारे में सोच रहे हैं, क्योंकि उन्हें यह समझाने की आवश्यकता है कि कैसे और क्यों भगवान कृष्ण और उनकी दी हुयी शिक्षा सर्वोच्च हैं. ये लोग मन से कृष्ण का ध्यान करने में लगे हैं.

"हर वर्ष जगन्नाथ पुरी मत आओ, पर बंगाल में रहकर मेरी इच्छा पूरी करो." (भगवान श्री चैतन्य, चै च मध्य १६.६४)

"अपनी संतुष्टि के लिए वृन्दावन या जगन्नाथ पुरी में रहने से अधिक महत्वपूर्ण है चैतन्य महाप्रभु के पंथ का सम्पूर्ण विश्व में प्रचार करना. कृष्णभावनामृत का विस्तार ही श्री चैतन्य महाप्रभु का लक्ष्य था, इसलिए उनके गंभीर भक्तों को उनकी इच्छा कार्यान्वित करना चाहिए."
(श्रील प्रभुपाद द्वारा तात्पर्य, चै च मध्य-लीला १३.८०).

२. भगवान कृष्ण की चेतना का विकास - दिव्य चेतना

अच्छा व्यवहार भक्ती है. कृष्ण चेतना सिर्फ कृष्ण के बारे में सोचना नहीं है, बल्कि इससे भी महत्वपूर्ण है कि कृष्ण की चेतना को कुछ हद तक विकसित किया जाए. हम उनके बराबर कभी नहीं बन सकते, लेकिन हम अपनी चेतना को बहुत अधिक स्तर तक बढ़ा सकते हैं.

अगर हर कोई सिर्फ कृष्ण की सेवा करना चाहता है, तो इस बात पर विचार नहीं करेंगे कि हम आपस में कैसे व्यवहार करते हैं. हम लड़ रहे होंगे और इस बात पर बहस कर रहे थे कि मंदिर में उनकी सेवा कौन कर सकता है और हमारे बीच अहंकार, घमंड और ईर्ष्या होगी. कृष्ण चेतना में हमारी चेतना का विकास भी शामिल है, ताकि हम एक दूसरे के साथ अच्छा व्यवहार करें. हमें अपनी चेतना को दिव्य चेतना बनाना है.

कृष्ण की चेतना जिसे हमें विकसित करने का प्रयास करना चाहिए

अ. कृष्ण पूर्ण सत्य है. हमें हमेशा सभी परिस्थितियों में सच्चा होना चाहिए.

आ. कृष्ण सभी जीवों के प्रति दयालु हैं. हमें सभी जीवों के प्रति दयालु बनना चाहिए.

इ. कृष्ण अपनी सारी संपत्ति (पूरी सृष्टि) हमारे साथ बांटते है, हम कम से कम अपना कुछ सामान दूसरों के साथ बाँट सकते हैं जिनकी उन्हें आवश्यकता है.

- **ई. कृष्ण सर्वोच्च नियंत्रक और लाखों ब्रह्मांडों के मालिक हैं, लेकिन फिर भी वह अहंकार से पूरी तरह मुक्त हैं. हमें अपने अहंकार और गर्व को कम करना चाहिए.**
- **उ. कृष्ण सभी स्थितियों में सभी के लिए समान हैं. हमें स्वीकार करना चाहिए कि जीवन में उतार-चढ़ाव होंगे और दूसरों के साथ सभी स्थितियों में समान होना सीखें.**
- **ऊ. कृष्ण हर चीज में पूरी तरह से संतुष्ट हैं. हमारे पास अभी जो भी है उसमें संतुष्ट होना चाहिए है और अधिक के लिए लालची नहीं होना चाहिए.**
- **ऋ. कृष्ण सबसे विनम्र हैं; हमें भी विनम्र बनना चाहिए.**
- **ऌ. कृष्ण अहिंसक हैं, हमें भी जानवरों को न मारकर अहिंसक बनना चाहिए. नशा नहीं करना चाहिए क्योंकि इससे दूसरों को चोट पहुँचती है, न कि जुआ जो महिलाओं और बच्चों के लिए कष्ट का कारण बनता है. विवाह के बाहर कोई संबंध नहीं रखना चाहिए क्योंकि यह महिलाओं और बच्चों के लिए दुख का कारण बनता है.**
- **ऍ. कृष्ण सबसे अधिक सहिष्णु हैं; वह हमें पुनर्जन्म के माध्यम से उन्हें प्राप्त करने के लिए असीमित अवसर देते है. हमें भी दूसरों के साथ सहिष्णु बनना चाहिए.**

ऎ. कृष्ण सबसे सरल हैं. उनका पेशा गायों की देखभाल करना है. हमें एक साधारण जीवन जीना चाहिए और दूसरों से मांग नहीं करनी चाहिए.

ए. कृष्ण सबसे पवित्र है, हमें दिन में कम से कम एक बार नहाना चाहिए, दिन में कम से कम दो बार दांत ब्रश करना चाहिए, और अपने कार्य क्षेत्र, घर, नदियों और सार्वजनिक स्थानों को साफ रखना चाहिए.

ऐ. कृष्ण बहुत अच्छी तरह से संगठित है; वह सटीकता के साथ लाखों ब्रह्मांडों को बनाए रखते है. हमें ऐसा कौशल और मनोवृत्ति विकसीत करनी चाहिए जिससे हम सुनियोजित रह सके, समय पर काम कर सके साथ में हमारे अंदर गुणवत्ता, नियोजन, दायित्व और अनुक्रियता जैसे गुण विकसीत करने चाहिए.

"जो किसी से द्वेष नहीं करता, लेकिन सभी जीवों का दयालु मित्र है, जो अपने को स्वामी नहीं मानता और मिथ्या अहंकार से मुक्त है, जो सुख-दुख में समभाव रहता है, सहिष्णु है, सदैव आत्मतुष्ट रहता है, आत्मसंयमी है तथा जो निश्चय के साथ मुझमें मन तथा बुद्धि को स्थिर करके भक्ति में लगा रहता है, ऐसा भक्त मुझे अत्यन्त प्रिय है"(भगवान कृष्ण, भगवद-गीता १२.१३-१४)

"विनम्रता, दम्भहीनता, अहिंसा, सहिष्णुता, सरलता, प्रामाणिक गुरु के पास जाना, पवित्रता, स्थिरता, आत्मसंयम, इन्द्रियतृप्ति के विषयों का परित्याग, अहंकार का अभाव, जन्म, मृत्यु, वृद्धावस्था तथा रोग के दोषों की अनुभूति, वैराग्य, सन्तान, स्त्री, घर तथा अन्य वस्तुओं की ममता से मुक्ति, अच्छी तथा बुरी घटनाओं के प्रति समभाव, मेरे प्रति निरन्तर अनन्य भक्ति, एकान्त स्थान में रहने की इच्छा, जन समूह से विलगाव, आत्म-साक्षात्कार की महत्ता को स्वीकारना, तथा परम सत्य की दार्शनिक खोज – इन सबको मैं ज्ञान घोषित करता हूँ और इनके अतिरिक्त जो भी है, वह सब अज्ञान है." (भगवान कृष्ण, भगवद-गीता १३.८-१२)

भगवद-गीता १६.१-३ भी देखें.

३. भगवान कृष्ण के निर्देशों का पालन

भगवान कृष्ण के निर्देशों का पालन भक्ती है. भगवद-गीता में ७०० श्लोक हैं, और इनमें से ५७३ भगवान कृष्ण द्वारा बोले गए थे. इन निर्देशों का उद्देश्य सिर्फ इतना नहीं है कि लोग उनकी सेवा करें. यदि ऐसा होता, तो ७०० छंदों की आवश्यकता नहीं होती, बस कुछ ही पर्याप्त होते. वह चाहते है कि हम अपनी चेतना के विकास के लिए उनके निर्देशों का पालन करें.

भगवान कृष्ण चाहते हैं कि हम अपनी चेतना का विकास करें, ताकि हम एक अच्छे इंसांन बन सके और हमारे अंदर सब के लिया सेवा भाव हो. इस प्रकार, भगवद-गीता १२।१३ -१४,१३।८ -१२ और १६।१-३ में सूचीबद्ध गुणों का विकास करें. दूसरों को भी बचाने के लिए अपनी शिक्षाओं का प्रसार करें.

४. दूसरों की सेवा करना

दूसरों की सेवा भक्ती है. वैदिक शास्त्रों में बहुत स्पष्ट रूप से कहा गया है कि भगवान कृष्ण के भक्तों की सेवा भी भगवान कृष्ण की सेवा है. यहां तक कि गैर-भक्तों के लिए सेवा महत्वपूर्ण है, क्योंकि एक भक्त को विनम्र और सहनशील होना चाहिए. दूसरों की सेवा करने से, धीरे-धीरे हम विनम्र बनेंगे और सहन करना सीखेंगे. भक्तों से अच्छा व्यवहार दूसरों को उनके जैसा बनने के लिए प्रेरित करेगा, इस प्रकार वो भी भक्त बन जाते हैं. यह कृष्ण चेतना का उद्देश्य है की सभी जीवित तत्वों को उनकी मूल मातृभूमि, परमात्मा के पास वापस जाने के लिए जागरूक और योग्य बनाना.

मैं न तो किसी से द्वेष करता हूँ, न ही किसी के साथ पक्षपात करता हूँ. मैं सबों के लिए समभाव हूँ. किन्तु जो भी भक्तिपूर्वक मेरी सेवा करता है, वह मेरा मित्र है, मुझमें स्थित रहता है और मैं भी उसका मित्र हूँ (भगवान कृष्ण, भगवद-गीता ९.२९)

भगवान कृष्ण का एक शुद्ध भक्त अन्य भक्तों के बीच कोई अंतर नहीं करेगा, चाहे वे जिस भी गुरु या समूह का अनुसरण करें. भगवान कृष्ण यह नहीं कहते हैं कि केवल एक समूह के अनुयायी उनके पास जाएंगे और अन्य सभी नरक के लिए किस्मत में हैं, नहीं। भगवद-गीता में किसी भी गुरु या समूह का उल्लेख नहीं है, और इस प्रकार भगवान कृष्ण की नजर में, सभी समूहों के सभी भक्त और गुरु जो उपरोक्त सभी भक्ति मार्ग में से एक या अधिक का पालन करते है उनकी सेवा पूरी तरह से भगवन द्वारा स्वीकार कि जाती हैं.

"हे अर्जुन! वह पूर्णयोगी है जो अपनी तुलना से समस्त प्राणियों की उनके सुखों तथा दुखों में वास्तविक समानता का दर्शन करता है!" (भगवान कृष्ण, भगवद-गीता ६.३२)

स्वाभाविक रूप से कोई केवल कथा सुनने या एक समूह से गुरुओं की सेवा करने के लिए चुन सकता है, और दूसरों को अनदेखा कर सकता है, क्योंकि सभी को सुनने और सभी की सेवा करना व्यावहारिक नहीं है. यह ठीक है, मुद्दा यह है कि हमें सभी का सम्मान करना चाहिए और किसी का भी अनादर नहीं करना चाहिए. भगवान कृष्ण स्वयं अपने भक्तों की सेवा और प्रेम का स्वाद लेने के लिए कई बार प्रकट होते हैं. वह किसी भी समय किसी भी समूह में दिखाई दे सकता है.

"विनम्र साधुपुरुष अपने वास्तविक ज्ञान के कारण एक विद्वान् तथा विनीत ब्राह्मण गाय, हाथी, कुत्ता तथा चाण्डाल को समान दृष्टि (समभाव) से देखते हैं" (भगवान कृष्ण, भगवद-गीता ५.१८)

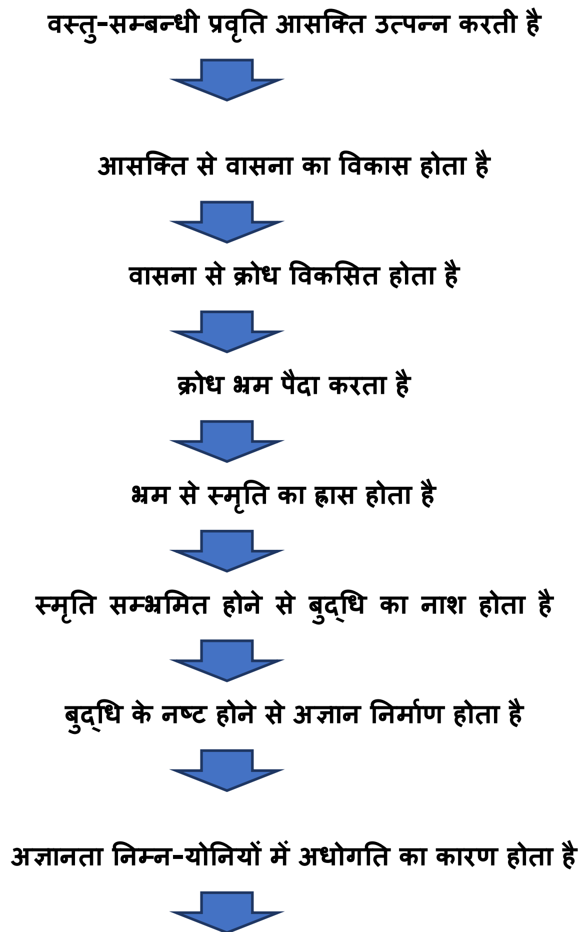
जो लोग अन्य समूहों से भक्तों को निचा देखते हैं या अन्य समूहों से भक्तों की सेवा करने से इनकार करते हैं क्योंकि वे विभिन्न समूहों से हैं, वह अपराध कर रहे हैं. जानबूचकर भगवान कृष्ण के भक्त का अपमान करना सबसे पापपूर्ण है, क्योंकि प्रत्येक भक्त भगवान कृष्ण के लिए बहुत कीमती है. प्रत्येक जीवित प्राणी भगवान कृष्ण के लिए अनमोल है, लेकिन एक परिवार की तरह, जो बच्चे पिता की सेवा करते हैं, वे उन लोगों की तुलना में प्रिय होते हैं, जो सेवा नहीं करते. उसी तरह, जो परम पिता, भगवान कृष्ण की सेवा करते हैं, वे उनके द्वारा पहचाने जाते हैं.

यह बहुत स्पष्ट है कि भगवद-गीता और इस प्रकार स्वयं भगवान कृष्ण के आधार पर, उनके लिए भक्ती (भक्ती सेवा) करने के कई तरीके हैं, न कि केवल एक तरीका.

लोगों के पास अलग-अलग रूचि, क्षमताएं, संसाधन हैं, और वे विभिन्न परिस्थितियों में स्थित हैं. लेकिन हर कोई उपरोक्त तरीकों से भगवान कृष्ण की सेवा कर सकता है, जैसा कि सीधे उनके द्वारा निर्धारित किया गया है.

"सदैव मेरा चिन्तन करो, मेरे भक्त बनो, मेरी पूजा करो और मुझे नमस्कार करो. इस प्रकार तुम निश्चित रूप से मेरे पास आओगे. मैं तुम्हें वचन देता हूँ, क्योंकि तुम मेरे परम प्रियमित्र हो।समस्त प्रकार के धर्मों का परित्याग करो और मेरी शरण में आओ. मैं समस्त पापों से तुम्हारा उद्धार कर दूँगा. डरो मत. (भगवान कृष्ण, भगवद-गीता १८-६५- ६६)

इन्द्रिय संतुष्टि का परिणाम



"इन्द्रियाविषयों का चिन्तन करते हुए मनुष्य की उनमें आसक्ति उत्पन्न हो जाति है और ऐसी आसक्ति से काम उत्पन्न होता है और फिर काम से क्रोध प्रकट होता है।क्रोध से पूर्ण मोह उत्पन्न होता है और मोह से स्मरणशक्ति का विभ्रम हो जाता है । जब स्मरणशक्ति भ्रमित हो जाति है, तो बुद्धि नष्ट हो जाती है और बुद्धि नष्ट होने पर मनुष्य भव-कूप में पुनः गिर जाता है"(भगवान कृष्ण, भगवद-गीता २-६२- ६३)

"जिस प्रकार पानी में तैरती नाव को प्रचण्ड वायु दूर बहा ले जाती है उसी प्रकार विचरणशील इन्द्रियों में से कोई एक जिस पर मन निरन्तर लगा रहता है, मनुष्य की बुद्धि को हर लेती है"(भगवान कृष्ण, भगवद-गीता २-६७)

"जब कोई रजोगुण में मरता है, तो वह सकाम कर्मियों के बीच जन्म ग्रहण करता है और जब कोई तमोगुण में मरता है, तो वह पशुयोनि में जन्म धारण करता है "(भगवान कृष्ण, भगवद-गीता १४ -१५)

"जीवन की इच्छाये इन्द्रियतृप्ति की और लक्षित नहीं होनी चाहिए. मनुष्य को केवल स्वस्त जीवन की या आत्म सरक्षण की कामना करनी चाहिए, क्योंकि मानव तो परम सत्य के विषय में जिज्ञासा करने के निमित बना है। मनुष्य की वृतियो का इसके अतिरिक्त, अन्य कोई लक्ष्य नहीं होना चाहिए." (श्रीमद भागवतम १.२.१०)

हम अपनी चेतना के विकास के अनुसार कार्य करते हैं

सभी मूर्त आत्माएँ अपनी चेतना के विकास के आधार पर तीन तरीको में कार्य करती हैं: सत्व, रज और तम गुण

चेतना विकास

उन लोगों के आधार पर जिन्हें हम देखते हैं, सुनते हैं और जिनके साथ जुड़ते, हम एक प्रकार की चेतना विकसित करते है

स्तर	चेतना का प्रकार	गुण विकसित हुए
१	पारलौकिक श्रेष्ठ	*"भगवान् ने कहा – हे भरतपुत्र! निर्भयता, आत्मशुद्धि, आध्यात्मिक ज्ञान का अनुशीलन, दान, आत्म-संयम, यज्ञपरायणता, वेदाध्ययन, तपस्या, सरलता, अहिंसा, सत्यता, क्रोधविहीनता, त्याग, शान्ति, छिद्रान्वेषण में अरुचि, समस्त जीवों पर करुण, लोभविहीनता, भद्रता, लज्जा, संकल्प, तेज, क्षमा, धैर्य, पवित्रता, ईर्ष्या तथा सम्मान की अभिलाषा से मुक्ति – ये सारे दिव्य गुण हैं, जो दैवी प्रकृति से सम्पन्न देवतुल्य पुरुषों में पाये जाते हैं "(भगवान कृष्ण, भगवद-गीता १६ १-३)* *"विनम्रता, दम्भहीनता, अहिंसा, सहिष्णुता, सरलता, प्रामाणिक गुरु के पास जाना, पवित्रता, स्थिरता, आत्मसंयम, इन्द्रियतृप्ति के विषयों का परित्याग, अहंकार का अभाव, जन्म, मृत्यु, वृद्धावस्था तथा रोग के दोषों की अनुभूति, वैराग्य, सन्तान, स्त्री, घर तथा अन्य वस्तुओं की ममता से मुक्ति, अच्छी तथा बुरी घटनाओं के प्रति समभाव, मेरे प्रति निरन्तर अनन्य भक्ति, एकान्त स्थान में रहने की इच्छा, जन समूह से विलगाव, आत्म-साक्षात्कार की महत्ता को स्वीकारना, तथा परम सत्य की दार्शनिक खोज – इन सबको मैं ज्ञान घोषित करता हूँ और इनके अतिरिक्त जो भी है, वह सब अज्ञान है "(भगवान कृष्ण, भगवद-गीता १३ ८ - १२)* ***खाद्य विकल्प:*** ***ताजा पकाया हुआ शाकाहारी व्यंजन और फल जो पहले भगवान कृष्ण को अर्पित किए जाते हैं***
२	सत्व	उपरोक्त पारलौकिक गुण लेकिन कम स्तर पर ***खाद्य विकल्प:*** *"जो भोजन सात्विक व्यक्तियों को प्रिय होता है, वह आयु बढ़ाने वाला, जीवन को शुद्ध करने वाला तथा बल, स्वास्थ्य, सुख तथा तृप्ति प्रदान करने वाला होता है .ऐसा भोजन रसमय, स्निग्ध, स्वास्थ्यप्रद तथा हृदय को भाने वाला होता है "(भगवान कृष्ण, भगवद-गीता १७.८)*
३	रज	**A mixture of the transcendental and ignorance qualities to a lower degree.** ***खाद्य विकल्प:*** *"अत्यधिक तिक्त, खट्टे, नमकीन, गरम, चटपटे,शुष्क तथा जलन उत्पन्न करने वाले भोजन रजोगुणी व्यक्तियों को प्रिय होते हैं . ऐसे भोजन दुख, शोक तथा रोग उत्पन्न करने वाले हैं "(भगवान कृष्ण, भगवद-गीता १७. ९)*
४	तम	*"हे पृथापुत्र! दम्भ, दर्प, अभिमान, क्रोध, कठोरता तथा अज्ञान – ये सारे आसुरी स्वभाव वालों के गुण हैं "(भगवान कृष्ण, भगवद-गीता १६. ४)* ***खाद्य विकल्प:*** *"खाने से तीन घंटे पूर्व पकाया गया, स्वादहीन, वियोजित एवं सड़ा, जूठा तथा अस्पृश्य वस्तुओं से युक्त भोजन उन लोगों को प्रिय होता है,जो तामसी होते हैं "(भगवान कृष्ण, भगवद-गीता १७।.१०)*

चेतना विकसित होने के परिणाम

"जब कोई रजोगुण में मरता है, तो वह सकाम कर्मियों के बीच जन्म ग्रहण करता है और जब कोई तमोगुण में मरता है, तो वह पशुयोनि में जन्म धारण करता है "(भगवान कृष्ण, भगवद-गीता १४. १५)

"जब कोई सतोगुण में मरता है, तो उसे महर्षियों के विशुद्ध उच्चतर लोकों की प्राप्ति होती है "(भगवान कृष्ण, भगवद-गीता १४.१४)

हमें वह मिलता है जिसकी हम इच्छा रखते है और जिसके हम हकदार हैं

हमारे विचारों सहित हम जो कुछ भी करते हैं, उसकी प्रतिक्रिया होगी जो हमारे कार्यों के अनुपात में होगी. जीवन एक बुद्धिमान रचना है; संयोग से कुछ भी नहीं होता है. हम यह पता नहीं लगा सकते कि किस क्रिया से क्या प्रतिक्रिया होती है. ऐसा इसलिए है क्योंकि हम अतीत में अपने सभी कार्यों को याद नहीं कर सकते हैं, जो हमने इस जीवन और पूर्व जीवन में किये है.

""कर्म की बारीकियों को समझना अत्यन्त कठिन है. अतः मनुष्य को चाहिए कि वह यह ठीक से जाने कि कर्म क्या है, विकर्म क्या है और अकर्म क्या है "(भगवान कृष्ण, भगवद-गीता ४. १७)

सामाजिक कार्य प्रणाली

जब लोगों को उनकी योग्यता के आधार पर काम की भूमिकाओं के लिए उपयुक्त ठहराया जाता है, तो समाज ठीक से काम करता है. अन्यथा समाज का दर्जा घट जाता है.

समाज में भूमिका	विकसित योग्यताएँ
ब्राह्मण - पुरोहित	*"शान्तिप्रियता, आत्मसंयम, तपस्या, पवित्रता, सहिष्णुता, सत्यनिष्ठा, ज्ञान, विज्ञान तथा धार्मिकता – ये सारे स्वाभाविक गुण हैं, जिनके द्वारा ब्राह्मण कर्मकरते हैं"(भगवान कृष्ण, भगवद-गीता १८ . ४२)*
क्षत्रिय - प्रशासन	*"वीरता, शक्ति, संकल्प, दक्षता, युद्ध में धैर्य, उदारता तथा नेतृत्व – ये क्षत्रियों के स्वाभाविक गुण हैं"(भगवान कृष्ण, भगवद-गीता १८ .४३)*
वैश्य - व्यवसाय और खेती	*"कृषि करना, गो रक्षा तथा व्यापार वैश्यों के स्वाभाविक कर्म हैं"(भगवान कृष्ण, भगवद-गीता १८. ४४)*
शूद्र - मजदूर	*"शूद्रों का कर्म श्रम तथा अन्यों की सेवा करना है"(भगवान कृष्ण, भगवद-गीता १८ . ४४)*

दुनिया में हर संगठन द्वारा अपनी योग्यता के आधार पर लोगों को काम की भूमिकाओं के लिए नियुक्त करने की अवधारणा का उपयोग किया जाता है.

धार्मिक दृष्टिकोण से, हर कोई समाज में अपनी कार्य भूमिका की परवाह किए बिना परिपूर्ण बन सकता है.

"अपने अपने कर्म के गुणों का पालन करते हुए प्रत्येक व्यक्ति सिद्ध होसकता है .अब तुम मुझसे सुनो कि यह किस प्रकार किया जा सकता है.जो सभी प्राणियों का उदगम् है और सर्वव्यापी है, उस भगवान् की उपासना करके मनुष्य अपना कर्म करते हुए पूर्णता प्राप्त कर सकता है "(भगवान कृष्ण, भगवद-गीता १८ . ४५ - ४६)

तपस्या कैसे करे

शारीरिक तपस्या	*"परमेश्वर, ब्राह्मणों, गुरु, माता-पिता जैसे गुरुजनों की पूजा करना तथा पवित्रता, सरलता, ब्रह्मचर्य और अहिंसा ही शारीरिक तपस्या है "(भगवान कृष्ण, भगवद-गीता १७. १४)* **प्रतिदिन स्नान करें, दांतों को दो बार ब्रश करें, घर और कार्य क्षेत्रों को साफ रखें, मुंह को मांस, तंबाकू और शराब से मुक्त रखें. अनावश्यक शोर न करें.**
भाषण की तपस्या	*"सच्चे, भाने वाले, हितकर तथा अन्यों को क्षुब्ध न करने वाले वाक्य बोलना और वैदिक साहित्य का नियमित पारायण करना – यही वाणी की तपस्या है "(भगवान कृष्ण, भगवद-गीता १७.१५)* **निरर्थक न बोले हमेशा सच बोले**
मन की तपस्या	*"तथा संतोष, सरलता, गम्भीरता, आत्म-संयम एवं जीवन की शुद्धि – ये मन की तपस्याएँ हैं "(भगवान कृष्ण, भगवद-गीता १७ १६)* **सभी के लिए एक सेवा यह हमारा दृष्टिकोण होना चाहिए. सभी जीवों की भलाई के बारे में सोचें और उनके लाभ के लिए कुछ करें.**

दान महत्वपूर्ण है

योग्य दान	*"जो दान कर्तव्य समझकर, किसी प्रत्युपकार की आशा के बिना, समुचित काल तथा स्थान में और योग्य व्यक्ति को दिया जाता है, वह सात्त्विक माना जाता है"(भगवान कृष्ण, भगवद-गीता १७.२०)*
ठीक ठाक दान	*"किन्तु जो दान प्रत्युपकार की भावना से या कर्म फल की इच्छा से या अनिच्छापूर्वक किया जाता है, वह रजोगुणी (राजस) कहलाता है "(भगवान कृष्ण, भगवद-गीता १७.२१)*
व्यर्थ दान	*"तथा जो दान किसी अपवित्र स्थान में, अनुचित समय में, किसी अयोग्य व्यक्ति को या बिना समुचित ध्यान तथा आदर से दिया जाता है, वह तामसी कहलाता है "(भगवान कृष्ण, भगवद-गीता १७. २२)*

७. भौतिक प्रकृति का विज्ञान

भौतिक निर्माण के तत्व

"पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, मन, बुद्धि तथा अहंकार – ये आठ प्रकार से विभक्त मेरी भिन्ना (अपर) प्रकृतियाँ हैं "(भगवान कृष्ण, भगवद-गीता ७.४)

ब्रह्मांड में ऊर्जा की उत्पत्ति

"समस्त उत्पन्न प्राणियों को मुझमें स्थित जानो"(भगवान कृष्ण, भगवद-गीता ९.५)

पदार्थ समय और सभी जीव तत्त्व (आत्मा) अनंत और चिरकालीन है

"प्रकृति तथा जीवों को अनादि समझना चाहिए।"(भगवान कृष्ण, भगवद-गीता १३.२०)

"मैं शाश्र्वत काल भी हूँ" (भगवान कृष्ण, भगवद-गीता १०.३३)



आत्मा एक जीवित इकाई है,
शरीर नहीं

हम सब सनातन हैं

हम सब दिव्य हैं

